ISSN (ELECTRONIC): 2945-3135

प्रियंका भारती & सुनील कुमार निरंजन (2026). ***नैमिषारण्य की अरण्य संस्कृति और सतत पर्यटन: एक समाहार.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 5(4). 425-435.

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH & REVIEWS

journal homepage: www.ijmrr.online/index.php/home

नैमिषारण्य की अरण्य संस्कृति और सतत पर्यटन: एक समाहार

प्रियंका भारती[1], डॉ0 सुनील कुमार निरंजन[2]

[1]असि. प्रो. अर्थशास्त्र विभाग, दी.द.उ. राजकीय स्नात्कोत्तर महाविद्यालय, सीतापुर (शोधार्थी)

[2]एसो.प्रो. अर्थशास्त्र, महाराजा बिजलीपासी राजकीय स्ना. महाविद्यालय आशियाना लखनऊ (शोध पर्यवेक्षक)

How to Cite the Article: प्रियंका भारती & सुनील कुमार निरंजन (2026). ***नैमिषारण्य की अरण्य संस्कृति और सतत पर्यटन: एक समाहार.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 5(4). 425-435.

DOI: https://doi.org/10.56815/ijmrr.v5i4.2026.425-435

Keywords	*Abstract*
नैमिषारण्य, अरण्य संस्कृति, प्राकृतिक पूंजी का संरक्षण, विरासतों का संरक्षण, सतत पर्यटन, पर्यावरण संरक्षण, इको-टूरिज्म.	विकसित भारत@2047 के वर्तमान संदर्भ में पर्यटन विकास केवल ईंट-पत्थर के निर्माण को ही व्याख्यायित करती हुई नहीं होनी चाहिए बल्कि इसका उद्देश्य क्षेत्रीय विविधता के संरक्षण व संवर्द्धन में निहित होना आवश्यक है| इसी परिप्रेक्ष्य में यदि हम तपोस्थली नैमिषारण्य के पर्यटन विकास की स्थिति-प्रस्थिति की चर्चा करें तो यहाँ के भविष्य की राह इसकी 'अरण्य संस्कृति' को पुनर्जीवित करने में ही फलित होती दृष्टिगोचर होती है| प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य नैमिषारण्य के वर्तमान पर्यटन विकास की दिशा और दशा के समीक्षा करने के साथ-ही इस प्रश्न का समुचित उत्तर तलाश करने में निहित है कि आखिरकार कैसे नैमिषारण्य की शान्ति और सात्विकता को बनाये रखते हुए प्राकृतिक पूंजी व आधुनिक और पौराणिक

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

प्रियंका भारती & सुनील कुमार निरंजन (2026). ***नैमिषारण्य की अरण्य संस्कृति और सतत पर्यटन: एक समाहार.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 5(4). 425-435.

	विरासतों का संरक्षण किया जाए जिससे आने वाले समय में यह परिक्षेत्र विश्व के सबसे महत्वपूर्ण 'कोग्नीटिव टूरिज्म' का केंद्र बने और निरंतरता के साथ देशी-विदेशी पर्यटक यहाँ ज्ञान और शान्ति की तलाश में आयें| इस दृष्टि से प्रस्तुत शोध-पत्र नैमिषारण्य जैसे पवित्र भूमि के 'वन' आधारित आध्यात्मिक ढाँचे, ऋषियों के पारिस्थितिकी प्रेम और वर्तमान पर्यटन विकास के मध्य सामंजस्य स्थापित करने के तरीकों का विश्लेषण करता है|

प्रस्तावना

हम जानते हैं कि नैमिषारण्य को एक वैश्विक आध्यात्मिक केंद्र के रूप में स्थापित करने हेतु एक संतुलित, समावेशी तथा भविष्योन्मुखी दृष्टिकोण की नितांत आवश्यकता समय की मांग है| जहां साक्ष्य और संदर्भित साहित्यिक दस्तावेजों के अनुसार पर्यटन विकास के मध्येनजर भावी व आगामी रणनीतियों को **'आध्यात्मिकता, आधुनिकता और स्थिरता'** के त्रिकोण पर सतत पर्यटन की अवधारणा के साथ आधारित होना चाहिए| साक्ष्य बताते हैं कि भारतीय संस्कृति के मूल में 'अरण्य' अर्थात् 'वन' रहे हैं, जहां गौरतलब है कि वेदों और उपनिषदों की रचना भी इन्हीं वनों से हुई है| अरण्य संस्कृति का संवाहक नैमिषारण्य जो सर्वोच्च पीठ के रूप में जाना जाता है वह स्थान है जहां तपस्या और ज्ञान के आदान-प्रदान के लिए प्रकृति को आधार तत्व माना जाता था| इस दृष्टि से नैमिषारण्य केवल एक भौगोलिक स्थान नहीं है, बल्कि प्राचीन भारत की 'अरण्य संस्कृति' का जीवंत केंद्र है| नैमिषारण्य का नामकरण ही इसकी अरण्य संस्कृति का परिचायक है| कहते हैं कि 'नैमिष' शब्द 'निमिष' अर्थात् क्षण-भर से सम्बंधित है, जहां ज्ञान की प्राप्ति बिजली की गति से होती है, इस विशाल ज्ञान के केंद्र में प्रकृति के सानिध्य में शोध और संवाद होता है|

नैमिषारण्य के अरण्य संस्कृति के स्तम्भ: साक्ष्य बताते हैं कि सूत जी द्वारा अठारह पुराणों का वाचन यहीं के अरण्य के मध्य किया गया था| जहां नैमिषारण्य की अरण्य संस्कृति तीन प्रमुख स्तंभों में टिकी हुई है, वे हैं-

पारिस्थितिकी संरक्षण: प्राचीनकाल से ही इस परिक्षेत्र के वृक्षों को 'देवतुल्य' माना गया है| जहां **'अक्षय वट'** इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है| ऋषियों ने यहाँ **'वृक्षायुर्वेद'** के सिद्धांतों का पालन करते हुए यहाँ की जैव-विविधता को संरक्षित करने का कार्य किया है|

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

प्रियंका भारती & सुनील कुमार निरंजन (2026). ***नैमिषारण्य की अरण्य संस्कृति और सतत पर्यटन: एक समाहार.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 5(4). 425-435.

ज्ञान-विस्तार और अरण्यक: साहित्यिक दस्तावेजों के अनुसार ब्राह्मण ग्रंथों के अंतिम भाग को 'अरण्यक' कहा जाता है, जिनका पठन-पाठन वनों में किया जाता था| नैमिषारण्य ऐसे ही असंख्य दार्शनिक चिंतन धाराओं का संगम-स्थल रहा है|

सतत जीवन-शैली: यहाँ की प्राचीन संस्कृति 'अपरिग्रह'(जरुरत से अधिक संचय न करना) और प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व की धारणा पर आधारित थी| इसे ही आज 'सस्टेनेबल लिविंग' की संज्ञा दी गई है| जिसका संरक्षण आवश्यक है|

पौराणिक अरण्य संस्कृति तथा वर्तमान पर्यटन विकास के मध्य चुनौतियां: ध्यानाकर्षक तथ्य यह है कि वर्तमान में यद्धपि नैमिषारण्य का पर्यटन विकास तीव्र गति से हो रहा है, तथापि इसके सकारात्मक पहलू के साथ-साथ नकारात्मक पहलू भी चुनौती के रूप में परिलक्षित हुए हैं, जहां कंक्रीट के बढ़ते निर्माण के कारण प्राचीन वन कहीं सिमट से गये हैं और 'कार्बन फुटप्रिंट' बढ़ गये हैं जो गंभीर चिंता का विषय है|

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य: प्रस्तुत शोध-पत्र के निर्माण हेतु निम्नवत उद्देश्यों को सूचीबद्ध किया गया है-

1. नैमिषारण्य जैसे पवित्र और पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्र के लिए लागत-लाभ विश्लेषण का संतुलन बनाना|

2. इस तथ्य को सुनिश्चित करना कि पर्यटन विकास व आर्थिक विकास पर्यावरण ह्रास की कीमत पर न हो|

3. संतुलन बनाये रखने हेतु रणनीतिक दृष्टिकोण व सुझाव प्रस्तुत करना|

शोध-पद्धति और डेटा विश्लेषण: प्रस्तुत शोध-पत्र के निर्माण हेतु द्वितीयक आंकड़ों और गुणात्मक विश्लेषण का प्रयोग किया गया है, जो प्रकृति में मौलिक है|

परिणाम तथा विवेचना: क्षेत्रीय पर्यटन डेटा और पारिस्थितिकी तंत्र की वर्तमान स्थिति के अवलोकन पश्चात यह प्रदर्शित है कि पिछले दशकों में शहरीकरण के कारण मूल वन क्षेत्र में 10-15% का दबाव बढ़ा है| नैमिषारण्य जो ऐतिहासिक रूप में एक सघन 'तपोस्थली' रहा है, पिछले कुछ दशकों

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

प्रियंका भारती & सुनील कुमार निरंजन (2026). ***नैमिषारण्य की अरण्य संस्कृति और सतत पर्यटन: एक समाहार.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 5(4). 425-435.

में तेजी से बढ़ते शहरीकरण और असंतुलित धार्मिक पर्यटन के कारण पर्यावरणीय संकटों का सामना कर रहा है| साक्ष्यों के अनुसार, 'नैमिषारण्य धाम तीर्थ विकास परिषद्' के गठन और पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु बुनियादी ढाँचे के विकास के कारण बड़ी संख्या में पुराने वृक्षों की कटाई हुई है| वहीँ जबकि 80% पर्यटक आध्यात्मिक शान्ति की तलाश में यहाँ आते हैं, जो प्रत्यक्ष रूप से यहाँ की 'अरण्य' संस्कृति से जुड़ाव के कारण संभव हुए हैं| गोमती नदी के कछार और वन-भूमि पर अतिक्रमण आश्रमों और धर्मशालाओं के निर्माण हेतु किया जा रहा है| शहरीकरण और कंक्रीट के ढाँचे बढ़ने से भूजल पुनर्भरण कम हुआ है जिससे मिटटी की नमी घट गई है तथा पुराने पवित्र उपवनों के वृक्ष स्वतः सूख रहे हैं| वहीँ शहरी कचरे व प्लास्टिक कचरे का सही निस्तारण न होने के कारण गोमती नदी के किनारे के वन-क्षेत्र की जैव-विविधता प्रभावित हुई है|

पिछले तीन दशकों के दौरान नैमिषारण्य और उसके परिक्षेत्रों के बफर जोन में हुए परिवर्तनों का विवरण तालिका-1.1 तथा तालिका-1.2 के माध्यम से निम्नवत प्रदर्शित है-

तालिका-1.1:

दशक	अनुमानित वन आवरण(Sq.km)	शहरी/निर्मित क्षेत्र	प्रमुख गतिविधि
1995-2005	~85 Sq. Km	~12%	पारंपरिक ग्रामीण विस्तार और कृषि
2005-2015	~72 Sq. Km	~22%	आश्रमों का निर्माण और सड़कों का आधुनिकीकरण
2015-2025	~58 Sq. Km	~38%	तीर्थ विकास परियोजनाएं और वृहद् अवसंरचना विकास

स्त्रोत: फ़ॉरेस्ट सर्वे ऑफ़ इंडिया रिपोर्ट (सीतापुर क्लस्टर)-लैंड कवर चेंज मैप

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

प्रियंका भारती & सुनील कुमार निरंजन (2026). ***नैमिषारण्य की अरण्य संस्कृति और सतत पर्यटन: एक समाहार.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 5(4). 425-435.

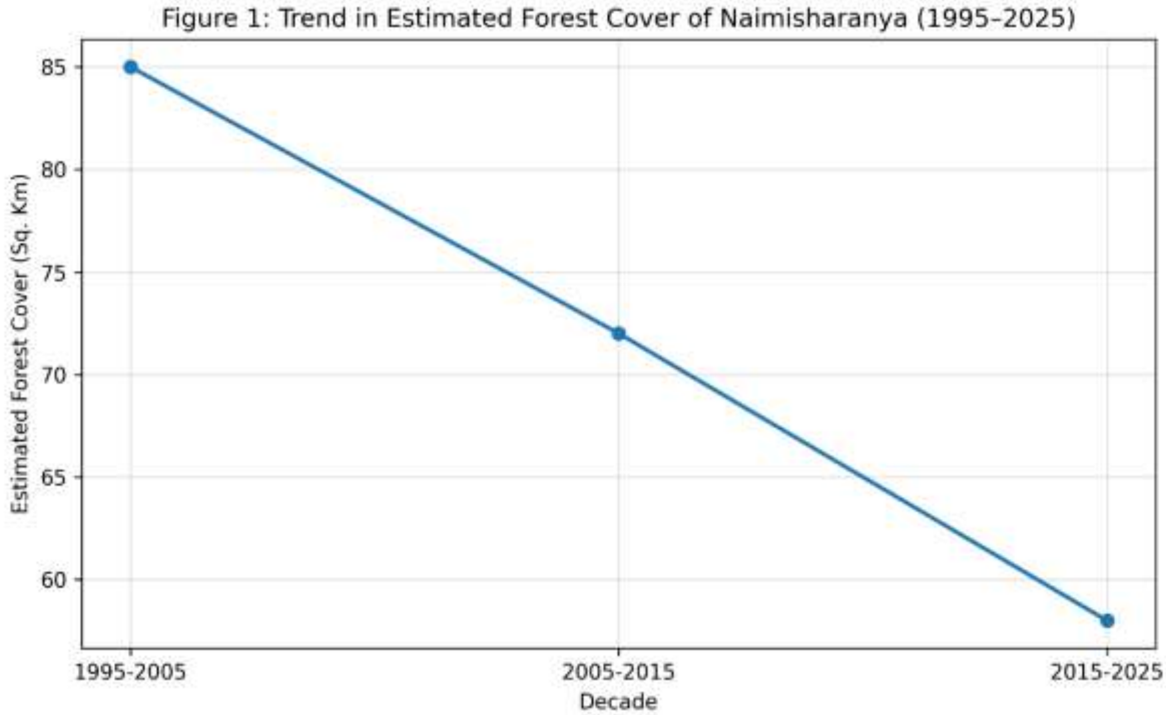

Figure 1: नैमिषारण्य क्षेत्र में अनुमानित वन आवरण की प्रवृत्ति (1995-2025)

यह ग्राफ तालिका 1.1 के आधार पर बनाया गया है।

Figure 1 नैमिषारण्य क्षेत्र के अनुमानित वन आवरण में समय के साथ हुए परिवर्तन को दर्शाता है। ग्राफ से स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि पिछले तीन दशकों में वन क्षेत्र लगातार कम हुआ है। 1995-2005 में अनुमानित वन आवरण लगभग 85 वर्ग किलोमीटर था, जो 2005-2015 में घटकर 72 वर्ग किलोमीटर रह गया और 2015-2025 तक यह लगभग 58 वर्ग किलोमीटर तक पहुँच गया। यह स्थिति बताती है कि क्षेत्र में बढ़ते निर्माण कार्य और पर्यटन गतिविधियों के दबाव के कारण प्राकृतिक वन क्षेत्र धीरे-धीरे सिमटता गया है। इससे पर्यावरणीय संतुलन और नैमिषारण्य की पारंपरिक अरण्य पहचान पर प्रभाव पड़ने की संभावना दिखाई देती है।

तालिका-1.2:

मानक	1995 (आधार वर्ष)	2010 (मध्यकाल)	2025 (वर्तमान	परिवर्तन(%)

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

प्रियंका भारती & सुनील कुमार निरंजन (2026). ***नैमिषारण्य की अरण्य संस्कृति और सतत पर्यटन: एक समाहार.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 5(4). 425-435.

			स्थिति)	
कुल वन क्षेत्र (अरण्य क्षेत्र)	100% (सापेक्ष)	82%	64%	-36%
निर्मित क्षेत्र	15%	28%	48%	+220%
प्रतिवर्षपर्यटक आगमन	~5-8 लाख	~15-20 लाख	~45-50 लाख	~600%
स्थानीय जैव-विविधता सूचकांक	उच्च	मध्यम	निम्न	----

स्त्रोत: पर्यावरण और वन मंत्रालय क्षेत्रीय बुलेटिन तथा रिमोट सेंसिंग एप्लिकेशन सेंटर

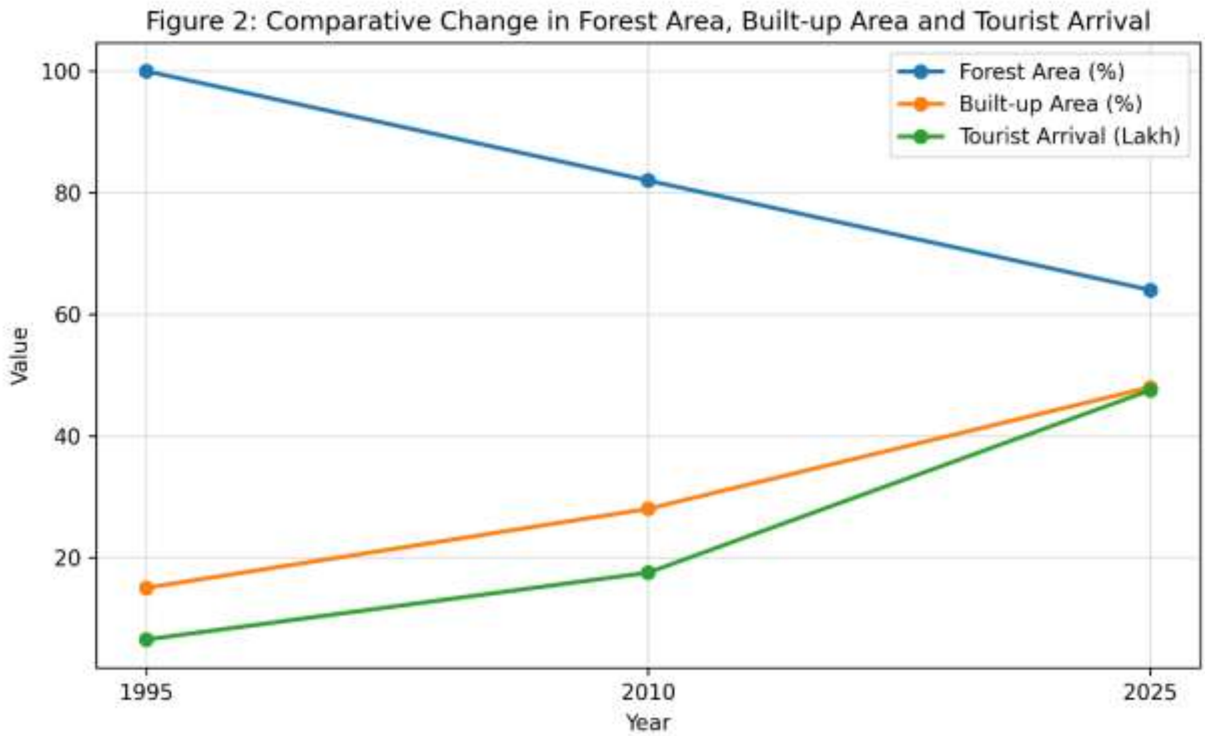

Figure 2: नैमिषारण्य में वन क्षेत्र, निर्मित क्षेत्र तथा पर्यटक आगमन का तुलनात्मक परिवर्तन (1995-2025)

यह ग्राफ तालिका 1.2 के आधार पर बनाया गया है।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

प्रियंका भारती & सुनील कुमार निरंजन (2026). ***नैमिषारण्य की अरण्य संस्कृति और सतत पर्यटन: एक समाहार.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 5(4). 425-435.

Figure 2 नैमिषारण्य क्षेत्र में वन क्षेत्र, निर्मित क्षेत्र और पर्यटक आगमन के बीच समय के साथ हुए परिवर्तन को प्रस्तुत करता है। ग्राफ से यह स्पष्ट होता है कि जहाँ वन क्षेत्र में निरंतर गिरावट दर्ज की गई है, वहीं निर्मित क्षेत्र और पर्यटक आगमन में लगातार वृद्धि हुई है। 1995 में वन क्षेत्र का सापेक्ष स्तर 100 प्रतिशत था, जो 2025 तक घटकर 64 प्रतिशत रह गया। इसके विपरीत निर्मित क्षेत्र 15 प्रतिशत से बढ़कर 48 प्रतिशत तक पहुँच गया। इसी अवधि में पर्यटक संख्या भी उल्लेखनीय रूप से बढ़ी। यह प्रवृत्ति संकेत देती है कि पर्यटन विकास के साथ क्षेत्रीय अवसंरचना का विस्तार हुआ है, लेकिन इसके साथ प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव भी बढ़ा है। इसलिए विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक दिखाई देता है।

पर्यावरण और वन मंत्रालय की क्षेत्रीय रिपोर्टों और फारेस्ट सर्वे ऑफ़ इंडिया के उपग्रह चित्रों के अनुसार, जनपद-सीतापुर के इस हिस्से में वन घनत्व में लगभग 15-20% की गिरावट दर्ज की गई है| पर्यटन और सेवा क्षेत्र में रोजगार के अवसरों के कारण नैमिषारण्य के आसपास के क्षेत्रों में जनसंख्या-घनत्व बढ़ा है, जिससे वनों का कटाव आवासीय भूमि के लिए हुआ है| पहले जो क्षेत्र 'ग्रीन बेल्ट' के अंतर्गत आते थे, वे अब 'मिश्रित भूमि उपयोग' में बदल दिए गये हैं| वन क्षेत्रों के कम होने और कंक्रीट निर्माण बढ़ने से स्थानीय तापमान में वृद्धि दर्ज की गई है| जो पुराने बरगद और पीपल के वृक्षों की लम्बी आयु के लिए घातक सिद्ध हो रहे हैं|

नैमिषारण्य में सतत पर्यटन के मध्येनजर भविष्य की राह व भावी संभावनाएं:

नैमिषारण्य के पर्यटन विकास हेतु भावी अनुशंषाओं के रूप में कुछ प्रमुख सुझाव अग्रलिखित हैं-

1.हरित बुनियादी ढाँचे का विकास व सुगमता सम्बन्धी सुझाव: इस भाग के महत्वपूर्ण बिन्दुओं का विवरण निम्नलिखित है-

इंटेलिजेंट ट्रैफिक मैनेजमेंट: सर्वेक्षण के दौरान यह पता चला है कि अमावस्या और मेलों के दरम्यान पर्यटकों की भीड़ अत्यधिक बढ़ जाती है जिसे देखते हुए प्रदूषण मुक्त सैटेलाइट पार्किंग और शटल बस सेवा विशेषकर इलेक्ट्रिक बसें अनिवार्य कर दी जानी चाहिए|

इको-पिलग्रिमेज मॉडल का विकास: निर्माण कार्यों में पारंपरिक वास्तुकला और प्राकृतिक सामग्री जैसे; मिटटी, पत्थर, चूना आदि का उपयोग किया जाना चाहिए|

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

प्रियंका भारती & सुनील कुमार निरंजन (2026). ***नैमिषारण्य की अरण्य संस्कृति और सतत पर्यटन: एक समाहार.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 5(4). 425-435.

सघन वृक्षारोपण: पंचकोशी परिक्रमा मार्ग को एक ग्रीन कॉरिडोर के रूप में विकसित किया जाना चाहिए जहां केवल और केवल स्थानीय औषधीय वृक्ष मौजूद हों|

डिजिटल आर्काइव: नैमिषारण्य की अरण्य संस्कृति और दुर्लभ पांडुलिपियों को डिजिटल रूप में सहेज कर **'डिजिटल अरण्य लाइब्रेरी'** का विकास किया जाना चाहिए|

हेलीपोर्ट सेवा का हरित विकास: लखनऊ और वाराणसी जैसे शहरों में सीधी हरित हेलीकाप्टर सेवा प्रारंभ किया जाना आवश्यक है| जिससे उच्च आय वर्ग के और विदेशी पर्यटक सुगमता से आकर्षित हो सकें|

परिक्रमा मार्ग का हरित मानकीकरण: 84-कोसी परिक्रमा मार्ग पर प्रत्येक पड़ाव पर आधुनिक हरित विश्राम गृह, स्वच्छ पेयजल, और चिकिसा केन्द्रों का निर्माण आवश्यक है|

2.आध्यात्मिक और सांस्कृतिक अनुभव का विस्तार: इस भाग के महत्वपूर्ण बिन्दुओं का विवरण निम्नलिखित है-

लाइट एंड साउंड शो: नैमिषारण्य के पौराणिक और ऋषियों की कथाओं को दर्शाने वाला अत्याधुनिक 'लेजर शो' का प्रसारण चक्रतीर्थ या व्यास गद्दी के समीप शाम के समय किया जाना चाहिए|

योग और ध्यान केंद्र की समुचित व्यवस्था: जैसा कि ज्ञात है कि नैमिषारण्य तपोस्थली के रूप में विख्यात है, जहां अंतर्राष्ट्रीय स्तर के 'मेडीटेशन स्ट्रीट' और 'आयुष केंद्र' की उपलब्धता होना आवश्यक है| जो निःसंदेह धार्मिक ही नहीं बल्कि 'वेलनेस टूरिज्म' को बढ़ावा देगी|

पांडुलिपियों के संग्रहण हेतु संग्रहालय की उपलब्धता: नैमिषारण्य की लुप्त होती पांडुलिपियों को डिजिटल रूप में संरक्षित कर एक विश्वस्तरीय शोध केंद्र और संग्रहालय बनाया जाना आवश्यक है|

3.आर्थिक और सामुदायिक सशक्तिकरण: इस भाग के महत्वपूर्ण बिन्दुओं का विवरण निम्नलिखित है-

कौशल विकास विश्वविद्यालय के स्थापना की आवश्यकता: नैमिषारण्य जैसे परिक्षेत्र के लिए स्थानीय युवाओं के लिए एक संस्थान जो उन्हें आतिथ्य, विदेशी भाषाएं और डिजिटल मार्केटिंग सिखाने के लिए एक कौशल विकास विश्वविद्यालय की आवश्यकता समय की मांग है|

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

प्रियंका भारती & सुनील कुमार निरंजन (2026). ***नैमिषारण्य की अरण्य संस्कृति और सतत पर्यटन: एक समाहार.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 5(4). 425-435.

ब्रांड नैमिषारण्य का विकास: नैमिषारण्य जैसे परिक्षेत्र में स्थानीय उत्पादों यथा; हस्तशिल्प, अगरबत्ती, औषधीय शहद और धार्मिक पुस्तकों की 'जीआईटैगिंग' करवाकर उन्हें ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म पर वैश्विक पहचान दिलाकर पर्यटन विकास को बढ़ावा दिया जा सकता है|

4.पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास की अवधारणा: साक्ष्य व साहित्यिक दस्तावेजों के अनुसार, नैमिषारण्य की आत्मा इसके 'अरण्य' अर्थात् वनों में निवास करती है, जिसे संरक्षित करने हेतु निम्न उपायों पर अमल किया जाना चाहिए-

शून्य-प्लास्टिक क्षेत्र घोषित करना : नैमिषारण्य के सम्पूर्ण मंदिर परिसर को 'प्लास्टिक मुक्त' घोषित कर इस पर सख्ती से अमल किया जाना आवश्यक है|

हरित गलियारा का विकास: 'अक्षय वट' की तर्ज पर स्थानीय प्रजातियों के पेड़ों का सघन रोपण कर क्षेत्र के पारिस्थितिकी संतुलन को बनाये रखा जाना चाहिए|

वेस्ट-टू-वेल्थ प्रक्रिया का उपयोग: मंदिरों से निकलने वाले फूलों और जैविक कचरे से धूपबत्ती और जैविक खाद बनाने के लिए स्थानीय स्तर पर प्रोसेसिंग यूनिट्स लगाना समय की मांग है, जिससे पर्यावरण का संरक्षण किया जा सकता है|

निष्कर्ष: संतुलन बनाये रखने का मूल मंत्र ही - सतत पर्यटन विकास है| यदि हम केवल आर्थिक लाभ को देखेंगे तो भविष्य में पर्यावरणीय आपदाएं पर्यटन उद्योग को ही नष्ट कर देंगी| अतः निवेश का एक बड़ा हिस्सा प्राकृतिक पूंजी के संरक्षण में लगाना ही दीर्घकालिक आर्थिक समझदारी है| निष्कर्ष के रूप में यह कहना कदाचित अतिशयोक्ति नहीं कि नैमिषारण्य की अरण्य संस्कृति केवल अतीत का ही गौरव नहीं है बल्कि आने वाले दिनों व भविष्य के संकटों का समुचित समाधान भी है| यदि आने वाले समय में भी पर्यटन विकास के नाम पर यहाँ के वनों और प्राकृतिक शान्ति को नष्ट किया गया तो इसकी आध्यात्मिक आत्मा लुप्तप्राय हो जायेगी| उदाहरण के लिए, यहाँ मुख्य रूप से मिश्रित पर्णपाती वन पाये जाते थे, जिनमें अब सागौन और यूकेलिप्टस जैसे व्यावसायिक पेड़ों का वर्चस्व बढ़ गया है, जिससे स्थानीय पारिस्थितिकी को काफी नुकसान पहुंचा है| वहीँ शहरीकरण के कारण नदी के किनोरों पर होने वाले कटाव ने वन-क्षेत्रों की सीमा को भी कम कर दिया है| अतएव, नीति-निर्माताओं को विकास की नीतियों के निर्माण के समय यहाँ के 'अरण्य'

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

प्रियंका भारती & सुनील कुमार निरंजन (2026). ***नैमिषारण्य की अरण्य संस्कृति और सतत पर्यटन: एक समाहार.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 5(4). 425-435.

को केंद्र में रखा जाना अत्यावश्यक है| हालांकि संतोष का विषय है कि सरकार अब 'ग्रीन कॉरिडोर' के माध्यम से पुनर्वनीकरण का प्रयास कर रही है|

अभिस्वीकृति : मै प्रियंका भारती, शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, शोध कार्य में मार्गदर्शन व सहयोग हेतु शोध पर्यवेक्षक डॉ सुनील कुमार निरंजन, शोध सहयोगियों एवम अर्थशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ के प्रति अपना आभार व्यक्त करती हूँ ।

AUTHOR(S) CONTRIBUTION

The writers affirm that they have no connections to, or engagement with, any group or body that provides financial or non-financial assistance for the topics or resources covered in this manuscript.

CONFLICTS OF INTEREST

The authors declared no potential conflicts of interest with respect to the research, authorship, and/or publication of this article.

PLAGIARISM POLICY

All authors declare that any kind of violation of plagiarism, copyright and ethical matters will take care by all authors. Journal and editors are not liable for aforesaid matters.

SOURCES OF FUNDING

The authors received no financial aid to support for the research.

REFERENCES (संदर्भ ग्रन्थ-सूची)

वायु पुराण (नैमिषारण्य खंड), अध्याय-2, श्लोक 14-22, गीताप्रेस गोरखपुर संस्करण (संक्षिप्त वायु पुराण), पृष्ठ संख्या 12-15

स्कंद पुराण (नैमिषारण्य खंड), अध्याय-1 से 5, गीताप्रेस संस्करण, पृष्ठ संख्या 442-450

उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग की वार्षिक रिपोर्ट (2024-25), धार्मिक पर्यटन विकास अनुभाग, पृष्ठ संख्या 78-82

डॉ0 आर0 सी0 मजूमदार, 'प्राचीन भारत का इतिहास',मोती लाल बनारसीदास पब्लिकेशन (हिंदी संस्करण), महाकाव्य काल और धार्मिक केंद्र, पृष्ठ संख्या 164-168

डॉ0 वासुदेव शरण अग्रवाल:भारत की मौलिक एकता, अध्याय-भूमि और जन तथा सांस्कृतिक तीर्थ, भारती भंडार प्रकाशन (संशोधित संस्करण), पृष्ठ संख्या 62-68

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी:पिलग्रिमेज टू फ्रीडम, प्रारंभिक अध्याय, भारतीय विद्या भवन पब्लिकेशन, पृष्ठ संख्या 14-18

पर्यावरण और वन मंत्रालय की क्षेत्रीय रिपोर्ट, स्टेट ऑफ़ फारेस्ट रिपोर्ट, क्षेत्रीय विश्लेषण, वार्षिक क्षेत्रीय बुलेटिन, पृष्ठ संख्या 112-115

सीतापुर जिला सांख्यिकीय पत्रिका

उत्तर प्रदेश पर्यटन नीति (2022-2027)

कल्याण (तीर्थ अंक)-गीताप्रेस, गोरखपुर

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License